अध्याय – 7
वैश्वीकरण

अंक भार – (1+1+4=6)

वस्तुनिष्ठ (1*1)

1. भारत में आर्थिक सुधारों की शुरूआत कब हुई?

(1) 1991 (2) 1990 (3) 2001 (4)1995 (1)

2. वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक कब हुई?

(1) 2004 (2) 2007 (3) 2001 (4) 2005 (3)

3. यूरोपीय और अमेरिकी फर्मो ने कौनसे पेड़ को पेटेन्ट कराने का प्रयास किया।

(1) खेजड़ी (2) नीम (3) पीपल (4) बरगद (2)

4. नीली जीन्स की लोकप्रियता कौनसे देश का सांस्कृतिक प्रभाव दर्शाती है?

(1) अमेरिका (2) जापान (3) भारत (4) सोवियत संघ (1)

5. कौनसे विचारक मौजूदा वैश्वीकरण को विश्वव्यापी पूंजीवाद की एक खास अवस्था मानते है?

(1) दक्षिणपंथी (2) पूंजीपति (3) उदारवादी (4) वामपंथी (4)

6. दक्षिणपंथी विचारक वैश्वीकरण को कौनसे प्रभाव का विरोध कर रहे?

(1) राजनैतिक (2) आर्थिक (3) सांस्कृतिक (4) कुटनीतिक (3)

7. वैश्वीकरण में सांस्कृतिक समरूपता के नाम पर किस संस्कृति को थोपा जा रहा है?

(1) भारतीस संस्कृति (2) पाश्चात्य संस्कृति (3) यूरोपीय संस्कृति (4) चीनी संस्कृति (2)

8. मैक्डोनाल्डीकरण वैश्वीकरण के किस प्रभाव का संकेत देता है?

(1) राजनीतिक प्रभाव (2) वैधानिक प्रभाव (3) सांस्कृतिक प्रभाव (4) आर्थिक प्रभाव (3)

9. वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक 2001 में पोर्टो अलगेरे में हुई थी, पोर्टो अलगेरे स्थित है–

(1) कनाडा में (2) स्विट्जरलैण्ड में (3) फ्रांस में (4) ब्राजील में (4)

अतिलघुत्तरात्मक (1*1)

1. वैश्वीकरण का क्या अर्थ है?

उत्तर – वैश्वीकरण एक अवधारणा के रूप में प्रवाह है, जिसमें विश्व के एक हिस्से के विचार, वस्तु, पूंजी व व्यापार विश्व के दूसरे हिस्से में संचार के माध्यम से पहुंचना ही वैश्वीकरण है।

2. वैश्वीकरण के कारण विश्व में क्या–क्या परिवर्तन हुए है?

उत्तर – 1. प्रौद्योगिकी का विस्तार :– टेलीग्राफ, टेलीफोन, माइक्रोचिप प्रौद्योगिकी का विस्तार

2. प्रौद्योगिकी के कारण विचार, पूंजी, वस्तु व लोगों की विश्व में आवाजाही आसान हो गई।

3. मैकडोनाल्डीकरण क्या है?

उत्तर – विभिन्न संस्कृतियां अपने को प्रभुत्वशाली अमेरिकी ढ़र्रे पर ढालने लगी है। जिससे विश्व की सांस्कृतिक धरोहर धीरे धीरे समाप्त होती जा रही है। जिससे समुची मानवता को खतरा पैदा हो गया। यह संस्कृति का नकारात्मक प्रभाव है।

4. सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण किसे कहते है?

उत्तर – वैश्वीकरण के कारण अपनी संस्कृति के पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों को छोड़े बिना उसे वैश्विक परिदृश्य में परिष्कृत करना सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण कहलाता है।

5. वैश्वीकरण की कोई दो आलोचनाएं लिखिए।

उत्तर – 1. वामपंथियों के अनुसार वैश्वीकरण पूंजीवाद की एक खास अवस्था है जो धनिक को अधिक धनी और गरीबों को अधिक गरीब बनाती है।

2. दक्षिणपंथियों के अनुसार वैश्वीकरण से राज्य कमजोर होने के कारण कुछ क्षेत्रों में आत्म निर्भरता और संरक्षण का दौर फिर कायम हो जाएगा।

6. वर्ल्ड सोशल फोरम क्या है?

उत्तर – वैश्वीकरण के विरोध में स्थापित विश्वव्यापी मंच है जिसमें मानवाधिकार कार्यकर्ता, पर्यावरणवादी, मजदूर, युवा, महिला कार्यकर्ता एकजुट होकर नवउदारवादी वैश्वीकरण का विरोध करते है।

7. वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक का आयोजन कब और कहां किया गया?

उत्तर – वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक – 2001 पोर्ट अलगेरे ब्राजील में
वर्ल्ड सोशल फोरम की चौथी बैठक – 2004 बम्बई भारत में।

8. वैश्वीकरण के उदय के दो कारण क्या है?

उत्तर – 1. प्रौद्योगिकी में तरक्की 2. विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव

9. एल.पी.जी से क्या तात्पर्य है?

उत्तरः– उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण।

10. भूमण्डलीकरण एक कैसा चर है?

उत्तरः– प्रवाह चर

11. वैश्वीकरण कैसी धारणा है?

उत्तरः– बहुआयामी

12. वैश्वीकरण को अन्य किस नाम से जाना जाता है?

उत्तरः– भूमण्डलीकरण

निबंधात्मक (4*1)

1. वैश्वीकरण का अर्थ स्पष्ट करते हुये, इसके कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः– वैश्विकरण :– विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया को वैश्विकरण के नाम से जाना जाता है। वैश्विकरण एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसमें एक देश का दूसरे देश या कई देशों से जुड़ाव होता है। वैश्विकरण से सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार या समुदाय के रूप में व्यक्त किया जाता है।

वैश्विकरण के कारण :– (1) वैश्विकरण के प्रसार का मुख्य कारण उन्नत प्रौद्योगिकी को माना जाता है। वर्तमान विश्व में टेलीग्राफ, टेलीग्राम, माइक्रोचिप, इन्टरनेट और छपाई ने संचार क्रांति में बढ़ोतरी की है। इन संचार के साधनों से विश्व के विभिन्न देश और नागरिक एक–दूसरे के करीब आये है और अपना जुड़ाव कायम किया है।

(2) विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव :– वर्तमान विश्व में सभी नागरिकों के मध्य एक पारस्परिक जुड़ाव बना हुआ है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपने को दूसरे लोगों से जुड़ा महसूस करता है। यही वजह है कि प्राकृतिक आपदाऐं जैसे – सुनामी, भूकंप, बाढ़ तथा अनेक महामारीयाँ किसी एक देश को प्रभावित नहीं करती है, बल्की इससे अनेक देश प्रभावित होते है। इसी आपसी जुड़ाव ने वैश्वीकरण की बढ़ोतरी में योगदान दिया है।

(3) बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ :– वैश्विकरण में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ विश्व के अनेक देशों में कार्यरत है। जिससे सम्पूर्ण विश्व आपस में जुड़ गया है। भारत की भी अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अनेक देशों में कार्यरत है।

2. वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलन पर एक निबंध लिखिये।

अथवा

कौन–कौनसे संगठनों द्वारा वैश्वीकरण का विरोध किया जा रहा है?

उत्तरः– विश्व स्तर पर अनेक संगठनों द्वारा वैश्वीकरण का विरोध किया जा रहा है, जिनमें से कुछ प्रमुख है–

(1) वामपंथी समुदाय – वामपंथियों का कहना है कि मौजूदा वैश्वीकरण विश्वव्यापी पूंजीवादी की एक खास अवस्था है, जो धनिकों को धनी तथा गरीबों को ओर ज्यादा गरीब बना देगी। वैश्वीकरण से राज्य की शक्ति में कमी आएगी। जिसके कारण वह गरीबों के हितों की रक्षा नहीं कर पाएगा। इस तरह वामपंथी मुख्य रूप से आर्थिक वैश्वीकरण का विरोध करते है।

(2) दक्षिणपंथी समुदाय – दक्षिणपंथी आलोचक वैश्वीकरण के राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभावों को लेकर चिंतित है। उन्हें राज्य के कमजोर होने की चिंता है तथा इनका कहना है कि कुछ क्षेत्रों में आर्थिक आत्मनिर्भरता और संरक्षणवाद कायम होना चाहिए। सांस्कृतिक संदर्भ में यह कहते है कि लोगों की प्राचीन संस्कृति और जीवन मूल्य लुप्त हो जाएगे। दक्षिणपंथियों के द्वारा विदेशी टी.वी. चैनलों, वैलेंटाइन डे मनाने तथा छात्र–छात्राओं द्वारा पश्चिमी पोशाक पहनने का विरोध भी शामिल है।

(3) वैश्वीकरण विरोधी आन्दोलन – वैश्वीकरण के विरोध में विश्व में अनेक आन्दोलन भी चल रहे है। लेकिन सम्पूर्ण वैश्वीकरण के विरोधी नहीं है। बल्कि इसके कुछ खास कार्यक्रमों के विरोधी है। विशेषकर आर्थिक साम्राज्यवाद के खिलाफ है। इन आन्दोलन में वर्ल्ड सोशल फोरम (WSF) द्वारा किया जाने वाला आन्दोलन प्रमुख है।

3. वैश्वीकरण के प्रतिरोध के प्रमुख कारणों को समझाइए।

उत्तरः- वर्तमान समय में वैश्वीकरण क तीव्र प्रतिरोध हो रहा है। जिसके निम्न कारण है।

(1) राज्य की शक्ति में कमी :– वैश्वीकरण के आलोचको का तर्क है कि वैश्वीकरण से राज्य की शक्ति में कमी होती जा रही है। राज्य अब पहले की तरह लोककल्याणकारी कार्य नहीं कर रहा है। लोक कल्याणकारी राज्य की जगह अब बाजार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकता का निर्धारक है तथा अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियां राज्यों में फैल चुकी है। जिससे राज्य शक्ति में कमी हो रही है।

(2) नवउपनिवेशवाद को जन्म दिया है एवं प्रसार कर रहा है :– वैश्वीकरण परम्परागत उपनिवेशवाद का एक नया रूप है। इसके अन्तर्गत एक विकसित तथा शक्तिशाली देश द्वारा किसी कमजोर देश पर सीधे आर्थिक शोषण करने के बजाय उसका अप्रत्यक्ष तरीके से शोषण किया जाता है। जिसके कारण वैश्वीकरण का विरोध हो रहा है।

(3) वैश्वीकरण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को बढ़ावा दे रहा है :– वे कम्पनियां जो एक से अधिक देशों में कार्य करती है, उन्हें बहुराष्ट्रीय कम्पनियां कहते है। इन कम्पनियों को वैश्वीकरण से बढ़ावा मिल रहा है। ये कम्पनियां निर्धन और विकासशील देशों के संसाधनों का दोहन कर रही है और उन्हें कमजोर बना रही है।

(4) परम्परागत संस्कृति की हानि :– वैश्वीकरण के प्रभाव से प्रभुत्वशाली संस्कृति कम ताकतवर समाजों पर अपना प्रभुत्व जमा रही है। इससे संसार वैसा ही दिखता है। जैसा ताकतवर संस्कृति उसे बनाना चाहती है अर्थात् वैश्वीकरण से प्राचीन सभ्यता व संस्कृतियां लुप्त होती जा रही है।

(5) धनिको को धनी तथा गरीबों को गरीब बनाना :– वैश्वीकरण निजीकरण को बढ़ावा देता है। इससे धनी लोग और धनी होते जा रहे है तथा गरीब और गरीबों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी होती जा रही है। अनेक लोगों को बुनियादी आवश्यकता की वस्तुएं भी नहीं मिल रही है और ऐसे लोग खाद्यापूर्ति के लिए दूसरे देशों पर निर्भर होते जा रहे है।

4. वैश्वीकरण के राजनैतिक प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरः- वैश्वीकरण के राजनैतिक प्रभाव का विवेचन निम्न तीन बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है–

(1) राज्य की शक्ति में कमी – वैश्वीकरण के कारण पूरी दुनिया में अब राज्य कुछ के मुख्य कार्यो जैसे – कानून व्यवस्था को बनाये रखना तथा अपने नागरिकों की सुरक्षा करना आदि तक ही अपने को सीमित कर लिया है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण राज्य की जगह अब बाजार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है।

वैश्वीकरण के चलते पूरे विश्व में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका बढ़ी है। इससे सरकारों के अपने दम पर फैसला करने की क्षमता में कमी आती है।

(2) राज्य की शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं – राजनीतिक समुदाय के आधार के रूप में राज्य कर प्रधानता को वैश्वीकरण से कोई चुनौती नहीं मिली है। राज्य इस अर्थ में आज भी प्रमुख है। आज भी राज्य कानून व व्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अनिवार्य कार्यो को पूरा कर रहे है। वैश्विक राजनीति में राज्य अभी भी महत्वपूर्ण बने हुए है।

(3) राज्य की शक्ति में वृद्धि हुई है – वैश्वीकरण के फलस्वरूप अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के बूते राज्य अपने नागरिको के बारे में सूचनाएं जुटा सकता है। इस सूचना के दम पर राज्य ज्यादा कारगर ढ़ग से काम कर सकते है। इस क्षेत्र में वैश्वीकरण के कारण राज्यों की क्षमता बढ़ी है।

5. वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः- वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव निम्नलिखित है–

(अ) वैश्वीकरण के सकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव :–

(1) बाहरी संस्कृति के प्रभावों से हमारी पसंद–नापसंद का दायरा बढ़ता है, जैसे बर्गर के साथ–साथ मसाला डोसा भी अब हमारे खाने में शाामिल हो गया है।

(2) वैश्वीकरण के प्रभावस्वरूप परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों को छोड़े बिना संस्कृति का परिष्कार भी होता है। जैसे नीली जीन्स के साथ खादी का कुर्त्ता पहनना। हम अनेक अमेरिकी लोगों को नीली जीन्स के ऊपर खादी का कुर्त्ता पहने देख सकते है। यह संस्कृति का परिष्कार ही है।

(3) वैश्वीकरण से हर संस्कृति कही ज्यादा अलग और विशिष्ट होती जा रही है। इस प्रक्रिया को सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण कहते है।

(ब) वैश्वीकरण के नकारात्मक सांस्कृतिक प्रभाव –

(1) वैश्वीकरण सांस्कृतिक समरूपता लाता है। जिसमें विश्व संस्कृति के नाम पर पश्चिमी सस्कृति लादी जा रही है।

(2) वैश्वीकरण के कारण विभिन्न संस्कृतियां अब अपने को प्रभुत्वशाली अमेरिकी ढ़र्रे पर ढ़ालने लगी है।

(3) इससे पूरे विश्व में विभिन्न संस्कृतियों की समृद्ध धरोहर धीरे–धीरे खत्म होती जा रही है। यह स्थिति समूची मानवता के लिए खतरनाक है।

6. वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उत्तरः- वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभावों को निम्न लिखित दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) वैश्वीकरण के सकारात्मक आर्थिक प्रभाव –

(1) वैश्वीकरण ने देशों के आयात प्रतिबंधों को कम किया है। जिससे सम्पूर्ण विश्व में वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि हुई है।

(2) वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व में पूंजी के प्रवाह में वृद्धि हुई है। क्योंकि अब धनी देश के निवेश कर्त्ता अपने धन को अपने देश के स्थान पर अन्य देशों में भी निवेश कर सकते है।

(3) वैश्वीकरण के कारण लोगों की आर्थिक समृद्धि और खुशहाली बढ़ी है।

(4) आर्थिक वैश्वीकरण के कारण लोगों में पारस्परिक जुड़ाव बढ़ रहा है। पारस्परिक निर्भरता अब तीव्र हो गई है।

(5) वैश्वीकरण के कारण अब एक देश के लोग दूसरे देशों में रोजगार, शिक्षा तथा व्यापार हेतु आ जा रहे है।

(ब) वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव :–

(1) आर्थिक वैश्वीकरण के कारण सरकारे अपनी सामाजिक न्याय की जिम्मेदारियों से अपना हाथ खीच रही है। इससे कमजोर वर्ग की स्थिति बदहाल हो रही है।

(2) वैश्वीकरण के चलते गरीब देश आर्थिक रूप से बर्बाद हो रहे है।

(3) विश्व के कुछ अर्थशास्त्रियों ने चिन्ता जाहिर की है कि आर्थिक वैश्वीकरण धीरे धीरे विश्व को पुनः उपनिवेशीकरण की ओर ले जा रहा है।

7. वैश्वीकरण के पक्ष और विपक्ष में तर्क दीजिये।

अथवा

वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः- वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव के पक्ष में तर्क :–

(1) वैश्वीकरण से लोगों में विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव बढ़ा है।

(2) वैश्वीकरण की प्रक्रिया द्वारा विकासशील देशों को उन्नत तकनीक का लाभ मिल रहा है।

(3) वैश्वीकरण ने विश्वव्यापी सूचना एवं संचार क्रांति को जन्म दिया है। इससे सामाजिक गतिशीलता बढ़ी है।

(4) वैश्वीकरण के कारण रोजगार की गतिशीलता में भारी वृद्धि हुई है।

(5) वैश्वीकरण के कारण पूंजी की गतिशीलता बढ़ी है। इससे प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश बढ़ा है।

वैश्वीकरण के विपक्ष में तर्क / नकारात्मक प्रभाव –

(1) वैश्वीकरण के कारण अमीर और अमीर होते जा रहे है, और गरीब और गरीब हो रहे है। इससे आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिलता है।

(2) वैश्वीकरण के कारण बुनियादी आवश्यकता की वस्तुऐं महंगी होती जा रही है और आम आदमी की पहुँच से बाहर हो गई है।

(3) वैश्वीकरण से परम्परागत संस्कृति की हानि होगी और लोग अपनी सदियों पुराने जीवन मूल्य तथा तौर–तरीको से हाथ धो बैठेगे।

सफलता मिशन - 100

(4) वैश्वीकरण के चलते विकासशील देशों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की एकाधिकारवादी प्रवृति बढ़ती जा रही है।

(5) वैश्वीकरण से राज्य की गरीबों के हितो की रक्षा करने की उसकी क्षमता में कमी आती है।

8. भारत पर वैश्वीकरण के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः– वैश्वीकरण ने भारत को काफी ज्यादा प्रभावित किया है। भारत ने 1990 के दशक के प्रारम्भ में अपनी अर्थव्यवस्था को खुला किया तथा वैश्वीकरण को अपनाया। वैश्वीकरण से भारत पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़े है। जो निम्न है–

भारत पर सकारात्मक प्रभाव –

(1) वैश्वीकरण से भारत के सकल घरेलु उत्पाद में लगातार वृद्धि हुई।

(2) वैश्वीकरण के भारत के आर्थिक विकास में तेजी आई है। भारत की विकास दर तेज गति से वृद्धि कर रही है।

(3) बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में विदेशी निवेश कर रही है और अपने साथ उन्नत प्रौद्योगिकी को ला रही है।

(4) भारत में सूचना एवं संचार क्षेत्र में लगातार उन्नति हो रही है।

(5) भारतीय वस्तुओं की गुणवता में सुधार आया है।

(6) भारत मे प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई है। और बेरोजगारी में कमी आई है।

नकारात्मक प्रभाव :–

(1) वैश्वीकरण से भारत में अमीर, अमीर होते जा रहे है तथा गरीब और ज्यादा गरीब हो रहे है।

(2) वैश्वीकरण के कारण अनेक भारतीय सरकारी कम्पनियां बंद हो गई है या घाटे में चल रही है, जिस कारण उन्हें निजी कम्पनियों को सस्ते मूल्य पर बेचा जा रहा है।

(3) वैश्वीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करती है तथा इन्होनें भारत में अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया है।

(4) वैश्वीकरण से अनेक वस्तुओं के मूल्य में तीव्र वृद्धि हुई है, जिससे बुनियादी आवश्यकता की वस्तुएं आम आदमी की पहुँच से बाहर हो गई है।

(5) बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपना काम निकलवाने के लिए भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी को बढ़ावा दे रही है।

शेखावाटी मिशन - 100